अध्याय 18

बिलदद का दूसरा भाषण

बिलदद का दूसरा भाषण अय्यूब को थोड़ी डांट के साथ आरम्भ होता है (18:1-4), उसके बाद दुष्टों की बुरी हालत पर एक लम्बा उपदेश होता है (18:5-21)। सेमुएल कॉक्स ने लिखा है, ''बुद्धि और अधिकार के लिए बिलदद उसी स्रोत के पास [लौट] आता है। इस संक्षिप्त अध्याय में लगभग एक दर्जन संकेत अरबी ज्ञानियों की इकट्ठा किए गए बेशकीमती ज्ञान है।''[1]

अय्यूब से न्यायसंगत होने की अपील (18:1-4)

[1]तब शूही बिलदद ने कहा, [2]''तुम कब तक फन्दे लगा लगाकर वचन पकड़ते रहोगे? चित्त लगाओ, तब हम बोलेंगे। [3]हम लोग तुम्हारी दृष्टि में क्यों पशु के तुल्य समझे जाते, और अशुद्ध ठहरे हैं। [4]हे अपने को क्रोध में फाड़नेवाले क्या तेरे निमित्त पृथ्वी उजड़ जाएगी, और चट्टान अपने स्थान से हट जाएगी?''

आयतें 1, 2. बिलदद ने अय्यूब को उत्तर दिया, **''तुम कब तक फन्दे लगा लगाकर वचन पकड़ते रहोगे? चित्त लगाओ, तब हम बोलेंगे।''** आयत 2 में क्रिया शब्द बहुवचन (''तुम'') में हैं। बिलदद अय्यूब को किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ मिलाता हुआ लग रहा था जो ज्ञानियों की लोकोक्तियों से झगड़ा करता हो। परन्तु वह यदि केवल अय्यूब के साथ ''आदरपूर्वक'' बहुवचन में बात कर रहा था तो इसे विडम्बना मान लेना चाहिए। बिलदद इस तथ्य से चिड़ गया था कि अय्यूब अपने मित्रों की सलाह पर ध्यान दिए बिना बोले जा रहा था।

आयत 3. ''हम लोग तुम्हारी दृष्टि में क्यों पशु के तुल्य समझे जाते, और अशुद्ध ठहरे हैं।'' फ्रांसिस आई. एंडरस ने कहा है कि ''बिलदद को अय्यूब की आवश्यकता पूरी करने के बजाय अपने स्वयं की प्रतिष्ठा की चिंता थी।''[2] ''पशु'' (*b^{e}hemah, बेहेमाह*) के रूपक का इस्तेमाल अज्ञानता के प्रतीक के लिए हुआ है (भजन संहिता 73:22)। अनुवाद हुआ शब्द ''अशुद्ध'' (*tamah, तामाह*) एक *हपक्स* यानी पुराने नियम में एक ही बार आने वाला शब्द है। इसका अक्षरश: अर्थ है ''हमें रोक दिया।''[3] बिलदद अय्यूब को जवाब दे रहा था कि उसमें उन्हें ''एक भी बुद्धिमान [न] मिल'' सका (17:10)।

आयत 4. मित्रों की समझ के बजाय अय्यूब का व्यवहार किसी जानवर के जैसा लग रहा था। बिलदद अय्यूब पर उसके अपने ही दु:ख के लिए उसे दोष दे रहा था। आखिर अय्यूब ने अपने पापों से मन फिराकर उनका अंगीकार नहीं किया था। बिलदद ने **फाड़ने** (*tarap, टरप*) और **क्रोध** (*'ap, आप*) शब्दों का इस्तेमाल किया, उन्हीं शब्दों का जिनका 16:9 में परमेश्वर पर आरोप लगाते हुए अय्यूब ने इस्तेमाल किया था: ''उसने *क्रोध* में आकर मुझको *फाड़ा* और मेरे पीछे पड़ा।''

''हे अपने को क्रोध में फाड़नेवाले क्या तेरे निमित्त पृथ्वी उजड़ जाएगी, और चट्टान

अपने स्थान से हट जाएगी?'' कॉक्स ने इस प्रश्न को अरबी लोकोक्तियों के साथ मिलाया: ''उसके लिए संसार खत्म नहीं हो जाएगा।'' और ''एक आदमी के लिए दुनिया नहीं खत्म हो जाती।''[14] अय्यूब पूछ रहा था कि क्या अय्यूब को लगता है कि उसके लिए पृथ्वी बदल जाए। एंडरसन ने लिखा है, ''वक्ता के पास जब विचार न रहें तो वह हंसी का सहारा ले सकता है।''[15]

दुष्टों का एक विवरण (18:5-21)

बिलदद ने उन कई विपत्तियों का उल्लेख किया जो दुष्टों की दुर्दशा के विवरण में उन्हें घेर लेती हैं।[16] उसकी टिप्पणियां उन विचारों का समर्थन करती हैं जो एलीपज ने अपने दूसरे भाषण में दिए थे (15:20-25)।

''दुष्ट व्यक्ति का दीपक बुझ जाएगा'' (18:5, 6)

[5]''निश्चय दुष्टों का दीपक बुझ जाएगा, और उसकी आग की लौ न चमकेगी। [6]उसके डेरे में का उजियाला अन्धेरा हो जाएगा, और उसके ऊपर का दिया बुझ जाएगा।''

आयतें 5, 6. बिलदद ने इन आयतों में ''प्रकाश'' के लिए चार अलग-अलग शब्दों **दीपक**, **लौ**, **उजियाला**, और **दिया** का इस्तेमाल किया। '''दीपक' का इस्तेमाल यहां दुष्टों के भरपूर जीवन और समृद्धि को दर्शाने के लिए, लाक्षिणक रूप में हुआ है।''[17] प्रकाश का विचार अय्यूब की पुस्तक में और पूरी बाइबल में बार-बार मिलता है (3:23; 12:25; 18:6; 30:26)। प्रकाश धार्मिकता का और वास्तव में स्वय परमेश्वर का प्रतीक है। भजनकार दाऊद ने परमेश्वर के लिए गया, ''क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे'' (भजन संहिता 36:9)। यूहन्ना ने लिखा,

> जो समाचार हम ने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, यह वह है; कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते; पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते है; और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:5-7)।

बिलदद ने कहा कि **दुष्टों का दीपक** बुझ जाता है। ''**उसकी आग की लौ न चमकेगी**'' जिसका अर्थ यह हुआ कि उसमें कोई गर्मी नहीं है। उसकी खुशहाली उससे छीन ली जाएगी। ''**उसके ऊपर का दिया बुझ जाएगा।**'' कॉक्स ने इन शब्दों को प्रताड़ित होने वाले अरबियों की आम कहावत के साथ मिलाया: ''किस्मत ने मेरा चिराग बुझा दिया।''[18] नीतिवचन की पुस्तक कहती है, ''धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है, परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है'' (नीतिवचन 13:9)। बिलदद को लगता था कि यह नियम हर जगह लागू होता है और अय्यूब का पतन उसके पाप के कारण था।

''दुष्ट व्यक्ति के पांव जाल में फंस जाएंगे'' (18:7-11)

[7]''उसके बड़े बड़े डग छोटे हो जाएँगे, और वह अपनी ही युक्ति के द्वारा गिरेगा। [8]वह अपना ही पाँव जाल में फँसाएगा, वह फन्दों पर चलता है। [9]उसकी एड़ी फन्दे में फँस जाएगी, और वह जाल में पकड़ा जाएगा। [10]फन्दे की रस्सियाँ उसके लिये भूमि में, और जाल रास्ते में छिपा दिया गया है। [11]चारों ओर से डरावनी वस्तुएँ उसे डराएँगी और उसके पीछे पड़कर उसको भगाएँगी।''

आयत 7. दुष्ट व्यक्ति के **बड़े-बड़े डग** बुराई के मार्ग पर चलते हुए उसकी आरम्भिक सफलता को दर्शाते हैं। परन्तु अंत में उसे **अपनी ही युक्ति** में ठोकर लगती है। जॉन ई. हार्टले ने कहा है, ''यह तस्वीर यह सबक देती है कि कोई दुष्ट व्यक्ति लम्बे समय तक खुशहाल नहीं रह सकता। न तो उसकी सामर्थ और न उसकी धूर्त चालें अनिश्चितकाल तक बनी रहेंगी।''[9]

आयतें 8-10. बिलदद ने दुष्ट व्यक्ति की खतरनाक चाल का वर्णन दुष्ट खतरों के प्रतीक के रूप में दिया जो फंदों और जालों की तरह उसे घेरे रखते हैं। इन आयतों में शिकार करने के छह अलग-अलग यंत्रों का उल्लेख किया गया है:

1. **जाल** (*resheth, रेशथ*), पक्षियों को पकड़ने वाला जाल;
2. **फंदा** (*śebakah, सिबाका*), जानवरों को पकड़ने वाला जाल;
3. **फंदा** (*pach, पैच*), पक्षियों का पिंजरा;
4. **जाल** (*tsammim, तसाम्मिम*), एक प्रकार का जाल या फंदा जो इब्रानी बाइबल में केवल यहीं पर मिलता है;
5. **फंदे की रस्सियां** (*chebel, चेबल*), रस्सी या फंदा;
6. **जाल** (*malkodeth, मलक्कोडेथ*), पकड़ने वाला एक यंत्र, जो इब्रानी बाइबल में केवल यहीं पर मिलता है।

यह लेखक द्वारा अपनी बात समझाने के लिए इस्तेमाल किए गए विभिन्न रूपकों की विशेषता है।

आयत 11. डर दुष्ट व्यक्ति के **पीछे पड़ा** रहता है। हर तरपफखतरा मण्डराता रहता है और उसे फंसाने को तैयार रहता है।

''दुष्ट व्यक्ति का स्वास्थ्य जाता रहेगा'' (18:12, 13)

[12]''उसका बल दुःख से घट जाएगा, और विपत्ति उसके पास ही तैयार रहेगी। [13]वह उसके अंग को खा जाएगी, वरन् काल का पहिलौठा उसके अंगों को खा लेगा।''

आयतें 12, 13. इस आरोप विशेषकर **उसका बल दुःख से घट जाएगा**, और **वह ... विपत्ति उसके अंग को खा जाएगी** शब्दों ने निश्चय ही अय्यूब को अंदर तक हिला दिया। (*'on, ऑन*) ''सम्पत्ति'' के लिए हो सकता है परन्तु इसका इस्तेमाल ''शारीरिक शक्ति'' के लिए भी होता है।[10] याद रखें कि ''पांव के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक बड़े-बड़े फोड़ों तक'' भरा अय्यूब राख के ढेर में बैठा था (2:7)।

''**काल का पहिलौठा उसके अंगों को खा लेगा।**'' कॉक्स ने टिप्पणी की, ''है कि सामी उपयोग के अनुसार रोगों को मृत्यु की *संतान* माना जाता है।''[11] अय्यूब की हालत को ''मृत्यु का पहलौठा'' यानी ''सबसे दर्दनाक और खतरनाक'' माना गया है।[12] इसी प्रकार से, ''अरबी लोग एक खतरनाक बुखार को 'भाग्य की बेटी' कहते हैं।''[13]

''दुष्ट व्यक्ति का निवास छिन जाएगा'' (18:14, 15)

[14]''अपने जिस डेरे का भरोसा वह करता है, उससे वह छीन लिया जाएगा; और वह भयंकरता के राजा के पास पहुँचाया जाएगा। [15]जो उसके यहाँ का नहीं है वह उसके डेरे में वास करेगा, और उसके घर पर गन्धक छितराई जाएगी।''

आयतें 14, 15. डेरे को उसके शरीर (देखें 4:21) और उसके निवास स्थान दोनों के अर्थ के रूप में समझा जा सकता है। **जो उसके यहाँ का नहीं है वह उसके डेरे में वास करेगा**, उसकी संतान अर्थात उसके बाल-बच्चों के छिनने की बात हो सकती है। **गंधक** (*goprith, गोपरिथ*) या ''सलफर'' (NRSV; NJPSV) बड़े विनाश और उजाड़ का प्रतीक है; किसी जगह पर गंधक और नमक के बिखरे होने का अर्थ है कि वहां कोई आबादी नहीं हो सकती (व्यवस्थाविवरण 29:23)।

''दुष्ट व्यक्ति को भुला दिया जाएगा'' (18:16-19)

[16]''उसकी जड़ सूख जाएगी, और डालियाँ कट जाएँगी। [17]पृथ्वी पर से उसका स्मरण मिट जाएगा, और बाजार में उसका नाम कभी न सुन पड़ेगा। [18]वह उजियाले से अन्धियारे में ढकेल दिया जाएगा, और जगत में से भी भगाया जाएगा। [19]उसके कुटुम्बियों में उसके कोई पुत्र-पौत्र न रहेगा, और जहाँ वह रहता था, वहाँ कोई बचा न रहेगा।''

आयत 16. इस आयत की भाषा ''पृथ्वी पर से दुष्टों के पूर्ण विनाश'' का इशारा करती है।[14] परमेश्वर ने अहंकारी और दुष्ट दोनों के एक ही अंत का खतरा बताया:

> ''क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि *उनका पता तक न रहेगा,* सेनाओं के यहोवा का यही वचन है'' (मलाकी 4:1)।

आयतें 17-19. प्राचीन निकट पूर्व में रहने वालों के लिए नि:संतान मर जाना एक भयंकर अंत ही माना जाता था। रॉबर्ट एल. आल्डन ने समझाया, ''व्यक्ति बच्चों में निर्भर रहता था इसलिए बे-औलाद मर जाने को बड़ा दुर्गाग्य और यहां तक कि ईश्वरीय दण्ड भी माना जाता था।''[15] बुद्धिमान ने कहा, ''धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है'' (नीतिवचन 10:7)। अय्यूब के चाहे दस बच्चे थे, पर वे सब के सब एक भयानक त्रासदी में मारे गए थे (1:2, 18, 19)। बिलदद की तीखी बातों ने बेशक अय्यूब के

दिल को चीर दिया था।

''दुष्ट व्यक्ति को परमेश्वर का ज्ञान नहीं है'' (18:20, 21)

20''उसका दिन देखकर पश्चिम के लोग चकित होंगे, और पूरब के निवासियों के रोएँ खड़े हो जाएँगे। 21निःसन्देह कुटिल लोगों के निवास ऐसे हो जाते हैं, और जिसको परमेश्वर का ज्ञान नहीं रहता उसका स्थान ऐसा ही हो जाता है।''

आयतें 20, 21. कुटिल व्यक्ति का **जिस पर परमेश्वर का ज्ञान नहीं रहता** भयानक **दिन** राह देखता है। **पश्चिम के लोग** हों या **पूर्व के निवासी** सब **चकित** होते हैं।

बिलदद ने जो कहा था उसमें *कुछ* सच्चाई तो थी पर अय्यूब पर उसने इसे गलत लागू किया। कॉक्स ने इस अध्याय की अच्छा समाप्ति वाक्य दिया है:

> उसकी गलती, पहली तो यह थी कि उसने *कुछ* तथ्यों को *सारे* बना दिया; और दूसरी यह कि, उसने अपने चुनिंदा तथ्यों की केवल एक व्याख्या मानी, चाहे उनमें से कई अतिसंवेदनशील थे। किसी भी अर्थ में, तर्क में भी नहीं, इसका मतलब यह नहीं है कि जो बात *कुछ* के लिए लागू होती है वही *सारे* पापियों पर भी लागू होती है; इसलिए नहीं कि पाप दुःख के आने का *एक* कारण है, बल्कि इसलिए कि दुःख का *कोई और* कारण है ही *नहीं*। और वास्तव में, यदि कुछ पापी ऐसे हों जो समय में अपने कर्मों के फल की कटनी काट रहे हों, तौभी ऐसे लोग भी हैं जो अधिक खुश नहीं हैं, कटनी नहीं काट रहे: यदि कुछ का पता लग जाने पर वे सामने आ जाएं, और उनके पृथ्वी से जाने से पहले उन पर प्रतिबंध लगा दिया जाए, तो ऐसे लोग भी हैं जो अपने विवेक द्वारा पीछा किए जाने से न तो पागल होते हैं और न उस समाज से निकाले जाते हैं जिसे उन्होंने आहत और भ्रष्ट किया।[16]

प्रासंगिकता

उद्देश्य से भटक जाना (अध्याय 18)

भाषणों के इस दूसरे दौर का अध्ययन करते हुए यह याद रखना आवश्यक है कि अय्यूब 2:11 में बताया गया था कि अय्यूब के मित्र, ''आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने अपने यहां से उसके पास चले।'' अफ़सोस कि अय्यूब के तीनों मित्र अपने उद्देश्य से भटक गए थे जिससे शैतान बड़ा हर्षित हुआ होगा। शैतान को अच्छा लगता है जब हम अपने उद्देश्य से भटककर निशाने से चूक जाते हैं कि परमेश्वर ने हमें क्यों भेजा है (मत्ती 5:16; 1 कुरिन्थियों 10:31)। शैतान को अच्छा लगता है जब परमेश्वर की संतान नम्रता से भटक जाती और घमण्ड से भर जाती है (मत्ती 23:5-12)। शैतान को अच्छा जगता है जब परमेश्वर की संतान बाइबल के हवाले देती पर फिर ''जिसका वे प्रचार करते हैं उसे खुद नहीं मानते'' (मत्ती 23:3; NIV)। शैतान को अच्छा लगता है जब

हम अपने उद्देश्य से भटक जाते और ''व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय और दया और विश्वास को'' नज़रअंदाज कर देते हैं (मत्ती 23:23)। शैतान को अच्छा लगता है जब परमेश्वर की संतान ''अंधे अगुवे बन जाते हैं जो मच्छर को छान डालते परन्तु ऊंट को निगल जाते हैं'' (मत्ती 23:24)। शैतान को अच्छा लगता है जब परमेश्वर की संतान एक दूसरे के प्रति डाह से भरे होते और ''एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हैं'' (गलातियों 5:15; NIV)।

घमण्ड से भरे शैतान का मानना था कि अय्यूब और उसके परिवार के ऊपर उसका ज़बर्दस्त हमला अय्यूब के विश्वास को नष्ट करने और यहोवा परमेश्वर को बदनाम करने के लिए काफ़ी होगा। इसके अलावा शैतान ने तीन प्रवक्ताओं का इस्तेमाल किया, जिन्होंने उसके काम में सहायता की; वे तीनों उस काम से भटक गए थे जो वे अय्यूब से मिलकर करने के लिए आए थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि पर्दे के पीछे शैतान बिलदद को दोबारा बोलते हुए सुनकर खुश हो रहा था, क्योंकि बिलदद ने उसी बात का समर्थन किया था जो उसने पहले अय्यूब से कहा था।

जब बिलदद जैसा कोई व्यक्ति अपने उद्देश्य से भटक जाता है तो आम तौर पर वह अपनी निष्पक्षता से भटक जाता है। बिलदद अय्यूब के साथ सहानुभूति करने और उसे कुछ शांति देने के लए आया था, अफसोस कि बिलदद उस विषय से भटक गया। उस आशीष पर विचार करें जो बिलदद अय्यूब को दिला सकता था यदि वह उस काम से पीछे न हटता जिसे वह अय्यूब के लिए करने आया था! अपने उद्देश्य से भटकना अय्यूब के लिए निष्पक्षता से भटकने का कारण हो गया। अय्यूब को अपने आरम्भिक भाषण में बिलदद ने कहा कि उसका मानना था कि अय्यूब अपने जीवन में किए पाप के कारण दु:ख उठा रहा है (8:6)। यह कल्पना चाहे गलत थी पर यह समझा जा सकता है कि तथ्य के प्रकाश में बिलदद का यह मानना था कि कइयों का यही मानना होगा। परन्तु बिलदद ने अय्यूब को अपने आपको बेकसूर कहते हुए सुना (9:21)। बिलदद ने एलीपज को भी दो बार बोलते और सोपर को एक बार बोलते हुए और अय्यूब के उत्तरों को भी सुना था। बिलदद के लिए अपनी बात पर विचार करने और सम्भावना पर विचार करने का काफी समय था हो सकता है कि अय्यूब सच बोल रहा हो। बिलदद के पास यह विचार करने का भी पर्याप्त समय था कि उसकी बात गलत भी हो सकती है। अफ़सोस कि ऐसा नहीं हुआ। अध्याय 8 की तरह बिलदद ने उसी आधार पर अपना दूसरा भाषण आरम्भ किया। उसने अय्यूब से पूछा, ''तुम कब तक फन्दे लगा लगाकर वचन पकड़ते रहोगे? चित्त लगाओ, तब हम बोलेंगे'' (18:2)। यह बात असंवेदनशील है और इससे पता चलता है कि बिलदद कितना असहिष्णु हो गया था। बिलदद तंग सोच वाला व्यक्ति भी था और इसी कारण वह अपने उद्देश्य से भटक गया था। बिलदद ने किसी और सम्भावना पर विचार करने के लिए अपनी सोच को बढ़ाना नहीं था।

जब बिलदद जैसा कोई व्यक्ति तंग सोच वाला बन जाता है, तो फिर वह कठोर, निर्दयी और भयावह हो जाता है। अय्यूब ने केवल इतना कहा था कि उसका प्राण निकला जाता है (17:1) और उसकी आशा जाती रही थी (17:15), फिर भी बिलदद को लगा कि अय्यूब जैसे उसके साथ बदसलूकी कर रहा हो (18:3)। अय्यूब ने अपने मित्रों को ''निकम्मे शांतिदाता'' (16:2) कहा था, पर वह दु:ख से भरा हुआ भी था और उसे शांति और करुणा की आवश्यकता थी (17:7)। बिलदद अय्यूब को कुछ शांति देने के इरादे से आया था पर यहां पर बिलदद रूखा और निर्दयी हो गया था। बिलदद अय्यूब को लैक्चर देना चाहता था और उसे सीधा करना

चाहता था। असली मित्रों को चाहिए कि अपने विचार और राय देने के योग्य हों, यदि वे एक दूसरे से असहमत हों तो भी, वे फिर भी एक दूसरे का आदर कर सकते हों और सच्चे मित्र बने रह सकते हों। बिलदद सच्चा मित्र नहीं बन रहा था। आयत 4 में बिलदद ने अय्यूब को बताया कि दुनिया उसके गिर्द नहीं घूमती और बिलदद ने अय्यूब से पूछा कि क्या उसको लगता है कि ऐसा होना चाहिए। फिर एक कठोर भाषण में बिलदद ने फिर यही संकेत दिया कि अय्यूब पापी है। बिलदद ने तर्क दिया कि दुष्टों के साथ क्या होगा; इस दूसरे भाषण में उसने जो कुछ भी कहा वह अंधकार और मृत्यु से सम्बन्धित था। बिलदद ने कहा कि दुष्ट जन का दीपक बुझ जाएगा (18:5)। उसने कई खतरे बताए जो दुष्ट व्यक्ति को फंसाकर उसे खत्म कर सकते थे (18:7-10)। फिर से बिलदद यह संकेत दे रहा था कि अय्यूब काबू आ चुका है। फिर बिलदद ने ''आतंक'' के विषय के आरम्भ किया और कहा कि दुष्ट व्यक्ति के आस पास, आतंक रहता है (18:11)। बिलदद ने उस शारीरिक आतंक की बात की जो आम तौर पर दुष्टों पर आता है (18:12, 13), और अय्यूब के साथ तो ऐसा हो चुका था। फिर बिलदद ने कहा कि ''वह भयंकरता के राजा के पास पहुंचाया जाएगा'' (18:14), और फिर उसने उसे आग और गंधक का उपदेश सुना दिया (18:15)। बिलदद के कहने का मतलब था कि अय्यूब की दुष्टता के कारण उस पर परमेश्वर की ओर से आग और गंधक वाला व्यवहार हुआ है। बिलदद कह रहा था कि इसके कारण अय्यूब के परिवार को भी दु:ख झेलना पड़ा और इसी कारण अय्यूब के अब कोई संतान नहीं थी (18:16-20)। यह इतना कड़वा तो था ही पर झूठ भी था। निश्चय ही बिलदद उस काम के उद्देश्य को भूल चुका था जो वह अय्यूब से मिलकर करने के लिए आया था और जो उसने कहा कि यह डरावना है।

जब बिलदद जैसा कोई व्यक्ति अपनी निष्पक्षता को भूल जाता है और कठोर और बेदर्द हो जाता है तो वह अनादर करने वाला भी हो सकता है। बिलदद ने अपना दूसरा भाषण अय्यूब का अपमान करते हुए और यह संकेत देते हुए खत्म किया कि अय्यूब को परमेश्वर का पता नहीं है (18:21)। बिलदद को पता था कि अय्यूब नामक उसका मित्र परमेश्वर का भय रखने वाला आदमी था (1:1), पर फिर भी उसने उसका अपमान किया।

सारांश। बिलदद को बिल्कुल यह समझ नहीं रही थी कि वह अय्यूब से क्यों मिलने आया था। मित्र और शांति देने वाला होने के बजाय बिलदद कठोर, निर्दयी और अपमान करने वाला विवादी बन गया। मसीही लोगों के रूप में हम कभी भी किसी के साथ भी निर्दयी, कठोर या बेदर्द न हों। हमें इस बात को कभी नहीं भुलाना चाहिए कि हम यहां क्यों हैं। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमेंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 216. उसने कहा कि ये संकेत आयतें 4, 5, 6, 7, 12, 13, 15, 17, और 20 में मिलते हैं। [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमेंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 188. [3]लुडविग कोहलर और वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:376. [4]कॉक्स, 222. [5]एंडरसन, 188. [6]देखें होमेर हेली, *ए कॉमेंट्री ऑन जॉब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994),

164–68. हेली ने पंद्रह विपत्तियां गिनाईं। [7]वहीं, 164. [8]कॉक्स, 222. [9]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब*, द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 276. [10]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:22. [11]कॉक्स, 225. [12]वहीं। [13]वहीं, 226. [14]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब*, द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 197. [15]वहीं, 198. [16]कॉक्स, 228–29.